



e-ISSN: 2319-8753 | p-ISSN: 2347-6710

IJIRSET

International Journal of Innovative Research in
SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY



INTERNATIONAL JOURNAL OF INNOVATIVE RESEARCH

IN SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

Volume 13, Issue 4, April 2024

ISSN INTERNATIONAL
STANDARD
SERIAL
NUMBER
INDIA

Impact Factor: 8.423

9940 572 462

6381 907 438

ijirset@gmail.com

www.ijirset.com

राष्ट्रीय आंदोलन में महिलाओं की भूमिका

¹Ramu Kumar, ²Dr.Anita Kavdia

¹UGC NET NFSC/JRF; Ph.D. Research Scholar, MLSU, Udaipur, Rajasthan, India

²Professor, Dept. Of History, Govt. Meera Girls College, Udaipur, Rajasthan, India

सार

ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन से भारत की स्वतंत्रता के लिए संघर्ष न केवल पुरुषों की बहादुरी से बल्कि महिलाओं की अदम्य भावना से भी चिह्नित था जो अपने पुरुष समकक्षों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर खड़ी थीं। स्वतंत्रता की ओर उथल-पुथल भरी यात्रा के दौरान, कई महिलाओं ने अटूट दृढ़ संकल्प, लचीलापन और देशभक्ति का प्रदर्शन किया। इन महिलाओं ने जनसमूह को संगठित करने से लेकर जुलूसों का नेतृत्व करने तक, विरोध प्रदर्शन आयोजित करने से लेकर भूमिगत आंदोलनों में योगदान देने तक की भूमिकाएँ निभाईं।

महिलाओं के योगदान का महत्व न केवल स्वतंत्रता आंदोलन के प्रक्षेप पथ को आकार देने में बल्कि लिंग भूमिकाओं और सामाजिक मानदंडों को फिर से परिभाषित करने में भी महत्वपूर्ण था। विभिन्न क्षेत्रों, पृष्ठभूमियों और जीवन के क्षेत्रों से, ये महिलाएं स्वतंत्रता के सामान्य बैनर के तहत एकजुट हुईं, और भारत के इतिहास पर एक अमिट छाप छोड़ीं।

परिचय

भारत के स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं की भागीदारी आंदोलन का एक महत्वपूर्ण और प्रभावशाली पहलू था। विभिन्न क्षेत्रों, धर्मों और सामाजिक पृष्ठभूमियों से संबंधित जीवन के सभी क्षेत्रों की महिलाओं ने ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन से स्वतंत्रता की लड़ाई में सक्रिय रूप से योगदान दिया।

स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं की भागीदारी की कई विशेषताएं थीं। वे थे:

- उच्च वर्ग की पहल: संभ्रांत राष्ट्रवादी महिलाओं ने राष्ट्रवादी आंदोलन में मध्यम वर्ग की महिलाओं की भागीदारी के लिए एक मिसाल कायम की। इसने कांग्रेस नेताओं को आंदोलन में महिलाओं के योगदान और भागीदारी के महत्व का एहसास कराया।
- गांधी फैक्टर : महात्मा गांधी ने महिलाओं की भागीदारी सुनिश्चित करने और प्रोत्साहित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और महिला अभिभावकों का समर्थन प्राप्त किया। अहिंसा को एक ऐसे कारक के रूप में देखा गया जिसने महिलाओं की समान भागीदारी को सुविधाजनक बनाया, क्योंकि उनमें सहनशीलता, साहस और पीड़ा सहने की क्षमता जैसे गुण थे।
 - प्रारंभ में, कांग्रेस और गांधी ने महिलाओं की केवल प्रतीकात्मक भागीदारी को प्रोत्साहित किया, वे चाहते थे कि वे अधिकार के पदों पर रहने के बजाय घर बनाने की भूमिकाओं पर ध्यान केंद्रित करें।
- WOMTTN के जारी करने पर ध्यान केंद्रित करें: जब तक कि Women vtrtr vttrtly entrtly entritdddddtdam thrugglt, Womtn के मुद्दों के बारे में चर्चा मुख्य रूप से वोटिंग के अधिकारों, education, propttry अधिकारों, और legal equally की सीमा के आसपास मुख्य रूप से revolved के बारे में है। ये सुधार महत्वपूर्ण थे लेकिन अक्सर परिवारों और समाज के भीतर महिलाओं की अधीनता के गहरे मुद्दों को संबोधित करने में विफल रहे।
- विविधता में एकता का प्रतिनिधित्व करता है: रानी लक्ष्मीबाई, बेगम हजरत महल और किचूर रानी चेनम्मा जैसी महिलाओं ने अद्वितीय रणनीतियों के साथ ब्रिटिश शासन का सक्रिय रूप से विरोध करने में भारत की क्षेत्रीय विविधता का प्रतीक बनाया। महात्मा गांधी से निकटता से जुड़ी कस्तूरबा गांधी ने नमक सत्याग्रह जैसे राष्ट्रव्यापी आंदोलनों में भाग लेकर सभी क्षेत्रों में महिलाओं की एकता का प्रतिनिधित्व किया।

स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं की भागीदारी का महत्व

- विभाजनों से परे "महिला" की सार्वभौमिक श्रेणी के कारण महिलाओं ने राष्ट्रवादी आंदोलन को एकजुटता प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
- राष्ट्रवादियों ने राष्ट्रवादी भावनाओं को जगाने और ब्रिटिश शासन को अवैध बनाने के लिए "भारत माता" की अवधारणा का इस्तेमाल किया, जिसने सार्वजनिक क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी को भी वैध बना दिया।
- प्रतिरोध के प्रभावी रूपों, जैसे विदेशी निर्मित कपड़े का बहिष्कार और दुकानों पर धरना देने के लिए महिलाओं का समर्थन आवश्यक था।
- महिला बुद्धिजीवियों ने नेतृत्व की भूमिका निभाई और विस्तारित महिला क्षेत्र से महिलाओं की भागीदारी को सुविधाजनक बनाया, जिससे घर और सार्वजनिक दुनिया के बीच एक मध्यवर्ती सामाजिक स्थान बना।
- स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं की भागीदारी ने उन्हें सशक्त बनाया और उन्हें घरेलू कारावास से बाहर सार्वजनिक जीवन, व्यवसायों और शासन की भूमिकाओं में ला दिया। इसने राष्ट्रीय आंदोलन को मजबूत किया और लैंगिक समानता के द्वार खोले।[1,2,3]

राष्ट्रीय आंदोलन में महिलाओं की भागीदारी

महात्मा गांधी ने माना कि महिलाओं के धैर्य, सहनशीलता और नैतिक साहस के गुण उन्हें सत्याग्रह के लिए आदर्श बनाते हैं।

- असहयोग आंदोलन (1920): महिलाओं ने स्कूलों और कॉलेजों सहित ब्रिटिश वस्तुओं और संस्थानों के बहिष्कार में सक्रिय रूप से भाग लिया। उन्होंने महात्मा गांधी द्वारा वकालत की गई अहिंसा पर जोर देते हुए विरोध मार्च और प्रदर्शनों का आयोजन किया और उनमें शामिल हुए। इसी आन्दोलन के दौरान वे पहली बार जेल भी गये।
- नमक सत्याग्रह (1930): सरोजिनी नायडू और कमला नेहरू जैसी महिलाओं ने महत्वपूर्ण नेतृत्व प्रदान किया, ऐतिहासिक नमक मार्च में महात्मा गांधी के साथ चलीं और सक्रिय रूप से नमक की दुकानों और दुकानों पर धरना दिया, ब्रिटिश नमक एकाधिकार को बाधित किया और प्रतिरोध का प्रतीक बनाया।
 - हालाँकि, महात्मा गांधी ने शुरू में नमक सत्याग्रह आंदोलन में महिलाओं के भाग लेने का विरोध किया था। सरोजिनी नायडू को उन्हें महिलाओं को नमक सत्याग्रह में शामिल होने की अनुमति देने के लिए मनाना पड़ा।
- भारत छोड़ो आंदोलन (1942) : महिलाएं सक्रिय रूप से विरोध प्रदर्शनों में शामिल हुईं, सामूहिक रैलियां आयोजित कीं, आंदोलन का संदेश फैलाया, गिरफ्तारियां और कारावास सहन किया और उनके संगठनों ने आर. संकल्प, सभी ब्रिटिश शासन को समाप्त करने और स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिए अपनी अटूट प्रतिबद्धता प्रदर्शित करते हैं।
- उन्होंने पुरुष नेताओं की गिरफ्तारी के बाद आंदोलन को जीवित रखने की जिम्मेदारी ली।
- उन्होंने सभाओं, जुलूसों, धरना प्रदर्शनों और नमक बनाने तथा बेचने में भाग लिया।
- सविनय अवज्ञा में महिलाओं की भागीदारी को उत्साह और अप्रत्याशित गिरफ्तारियों का सामना करना पड़ा।
- 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में महिलाओं ने बड़ी भूमिका निभाई। प्रमुख कांग्रेस नेताओं के पहले से ही जेल में होने के कारण, महिलाएं अंत तक सक्रिय रूप से गिरफ्तारी से बचती रहीं।
- गतिविधियाँ: महिलाएँ पर्व बनाने, भूमिगत साहित्य प्रसारित करने और कांग्रेस रेडियो चलाने में लगी रहीं।
- बन्नू मेरठ, असम, सागर, वर्धा और मद्रास प्रेसीडेंसी जैसे अप्रत्याशित स्थानों में महिलाओं के जुलूस और सक्रियता देखी गई।

प्रमुख महिला स्वतंत्रता सेनानी

भारत में कई प्रमुख महिला स्वतंत्रता सेनानी थीं। कुछ महत्वपूर्ण महिला स्वतंत्रता सेनानी थीं:

<p>एनी बेसेंट (1847-1933)</p>	<ul style="list-style-type: none"> - वह आयरिश और भारतीय होम-रूल की प्रबल समर्थक थीं। - थियोसोफिकल सोसायटी की मेडम ब्लावात्स्की से प्रभावित होकर उन्होंने थियोसोफी अपना ली। - एनी बेसेंट भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में शामिल हो गईं। - प्रथम विश्व युद्ध के फैलने के साथ, बेसेंट का मानना था कि भारत के पास एक अवसर है और उन्होंने पूर्ण स्वतंत्रता की मांग करते हुए 1916 में ऑल इंडिया होम रूल लीग की स्थापना की।
-----------------------------------	---

	<ul style="list-style-type: none"> - सितंबर 1917 में रिहा हुई , दिसंबर में उन्हें भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का अध्यक्ष चुना गया , जिसमें महात्मा गांधी का समर्थन था। - एनी बेसेंट ने शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जिसमें बनारस हिंदू विश्वविद्यालय की सह-संस्थापक भी शामिल थीं । - उन्होंने प्राचीन भारतीय धर्मों, दर्शन और सिद्धांतों के अध्ययन के महत्व पर जोर दिया। - बेसेंट ने सेंट्रल हिंदू स्कूल की स्थापना की और कई संस्थानों की स्थापना की, जिनमें मद्रास पार्लियामेंट, मदनपल्ले कॉलेज, अड्यार आर्ट्स लीग, बॉम्बे होम रूल लीग, बनारस में गर्ल्स कॉलेज, ऑर्डर ऑफ द ब्रदर्स ऑफ सर्विस, अड्यार में महिला इंडियन एसोसिएशन और ऑल शामिल हैं। -1927 में पूना में भारतीय महिला सम्मेलन।
बीकाजी कामा (1861-1936)	<ul style="list-style-type: none"> - बीकाजी कामा ने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय रूप से भाग लिया और स्वराज (स्व-शासन) की वकालत की । - 1907 में , उन्होंने जर्मनी में भारतीय ध्वज फहराने वाली पहली व्यक्ति बनकर इतिहास रचा , जिसे कामा और विनायक दामोदर सावरकर ने डिजाइन किया था। - कामा पेरिस स्थानांतरित हो गईं, जहां उन्होंने सह-संस्थापक मुंजरशाह बुर्जोरजी गोदरेज और एसआर राणा के साथ पेरिस इंडियन सोसाइटी की स्थापना की। - साहित्यिक योगदान: 'बंदे मातरम्' और 'मदन की तलवार'।
मातंगिनी हाजरा (1870-1942)	<ul style="list-style-type: none"> - उन्होंने महात्मा गांधी से प्रेरणा ली और उन्हें "गांधी बुरी" (बूढ़ी गांधीवादी महिला) के नाम से जाना जाने लगा। - वह असहयोग आंदोलन में शामिल हुईं। सविनय अवज्ञा आंदोलन के दौरान नमक सत्याग्रह में शामिल होने के कारण उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया था
सरोजिनी नायडू (1879-1949)	<ul style="list-style-type: none"> - उन्हें महात्मा गांधी द्वारा 'भारत कोकिला' या 'भारत कोकिला ' के रूप में मान्यता दी गई थी। - उन्होंने एनी बेसेंट द्वारा शुरू किए गए होम रूल आंदोलन में सक्रिय रूप से भाग लिया। - सरोजिनी नायडू सविनय अवज्ञा आंदोलन और भारत छोड़ो आंदोलन का नेतृत्व करने वाली एक प्रमुख हस्ती के रूप में उभरीं। - भारतीय-ब्रिटिश सहयोग को बढ़ावा देने के उद्देश्य से वह 1931 में दूसरे गोलमेज सम्मेलन के लिए महात्मा गांधी के साथ लंदन गईं । - महिला भारत संघ की स्थापना में सहायक । - 1925 में उन्हें भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का अध्यक्ष नियुक्त किया गया। - बाद में, 1947 में, वह संयुक्त प्रांत की गवर्नर बनीं और भारत डोमिनियन में इस तरह का पद संभालने वाली पहली महिला बनीं । -साहित्यिक योगदान: छोटी सी उम्र में उन्होंने 1300 पंक्तियों की कविता 'लेडी ऑफ द लेक' लिखी । उन्हें फ़ारसी भाषा के नाटक 'माहेर मुनीर' से अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहचान मिली।
रमादेवी चौधरी (1899-1985)	<ul style="list-style-type: none"> - वह महात्मा गांधी से काफी प्रभावित थीं - 1930 में, उन्होंने ओडिशा में नमक सत्याग्रह आंदोलन में प्रमुख भूमिका निभाई और महिलाओं को आजादी की लड़ाई में शामिल होने के लिए प्रेरित किया। - उन्होंने हरिजन सेवा संघ की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और बारी में एक आश्रम की स्थापना की, जिसे महात्मा गांधी ने सेवाघर नाम दिया था।
विजया लक्ष्मी पंडित (1900-1990)	<ul style="list-style-type: none"> - 1937 में, उन्होंने संयुक्त प्रांत का चुनाव जीता और मंत्री के रूप में कैबिनेट पद संभालने वाली पहली महिला बनीं। - उन्होंने लैंगिक अधिकारों और महिला कल्याण की वकालत करते हुए 1941 से 1943 तक अखिल भारतीय महिला सम्मेलन की अध्यक्ष के रूप में भी कार्य किया । - एनसीएम, सीडीएम और भारत छोड़ो आंदोलन में भाग लिया - संयुक्त राष्ट्र महासभा की अध्यक्ष बनने वाली पहली महिला

<p>कमलादेवी चट्टोपाध्याय (1903-1988)</p>	<ul style="list-style-type: none"> - वह एक स्वतंत्रता सेनानी और समाज सुधारक थीं। वह 1923 में लंदन से भारत लौट आईं और सेवा दल में शामिल हो गईं। - उनका अखिल भारतीय महिला सम्मेलन (एआईडब्ल्यूसी) की संस्थापक मार्गरेट कजिन्स के साथ घनिष्ठ संबंध था। - गांधीजी के नमक सत्याग्रह के दौरान, उन्हें बॉम्बे स्टॉक एक्सचेंज में प्रतिबंधित नमक बेचने के प्रयास के लिए गिरफ्तार किया गया था। - उन्होंने 1936 में जयप्रकाश नारायण और राम मनोहर लोहिया के साथ कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी की सह-स्थापना की और 1937 में इसकी अध्यक्ष बनीं। - कमलादेवी ने केंद्रीय विधानसभा में बाल विवाह निरोधक विधेयक और सहमति की आयु विधेयक को पारित करने के लिए सक्रिय रूप से वकालत की। - - - उन्होंने घरेलू और व्यावसायिक दोनों क्षेत्रों में महिलाओं के अधिकारों की वकालत की और समान नागरिक संहिता का समर्थन किया।
<p>सुचेता कृपलानी (1908-1974)</p>	<ul style="list-style-type: none"> - उन्होंने महिलाओं के अधिकारों और सशक्तिकरण की वकालत करते हुए 1940 में अखिल भारतीय महिला कांग्रेस की स्थापना की। - उन्होंने विभाजन के दंगों के कठिन समय के दौरान महात्मा गांधी के साथ मिलकर काम किया, 1946 में उनके साथ नोआखली भी गईं। - उन्हें संविधान सभा के सदस्य के रूप में भारतीय संविधान का मसौदा तैयार करने में भाग लेने वाली 15 महिलाओं में से एक के रूप में चुना गया था। - वह उत्तर प्रदेश की पहली महिला मुख्यमंत्री थीं।
<p>अरुणा आसिफ अली (1909-1996)</p>	<ul style="list-style-type: none"> - उन्हें व्यापक रूप से स्वतंत्रता आंदोलन की 'ग्रेड ओल्ड लेडी' के रूप में मान्यता मिली। - उनके सबसे उल्लेखनीय कार्यों में से एक 1942 में भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान बॉम्बे के गोवालिया टैंक मैदान में भारतीय राष्ट्रीय ध्वज फहराना था।
<p>बीना दास (1911-1986)</p>	<ul style="list-style-type: none"> - वह कोलकाता स्थित अर्ध-क्रांतिकारी महिला संगठन छत्री संघ की सदस्य थीं। - 6 फरवरी 1932 को उन्होंने कलकत्ता विश्वविद्यालय के कन्वोकेशन हॉल में बंगाल के गवर्नर स्टेनली जैक्सन पर हत्या का प्रयास किया। - 1939 में वह कांग्रेस पार्टी में शामिल हो गईं और भारत छोड़ो आंदोलन में सक्रिय रूप से भाग लिया।
<p>प्रीतिलता वादेदार (1911-1932)</p>	<ul style="list-style-type: none"> - वह सूर्य सेन के नेतृत्व वाले क्रांतिकारी समूह की सदस्य बन गईं। - उन्हें 1932 में पहाड़ाली यूरोपियन क्लब पर सशस्त्र हमले में पंद्रह क्रांतिकारियों के एक समूह का नेतृत्व करने के लिए प्रसिद्धि मिली, जिसके परिणामस्वरूप एक व्यक्ति की मौत हो गई और ग्यारह अन्य घायल हो गए। - क्लब में आग लगाने के बाद ब्रिटिश पुलिस ने क्रांतिकारियों का पीछा किया। पकड़ से बचने के लिए प्रीतिलता ने साइनाइड खा लिया, जिससे उनकी मृत्यु हो गई।
<p>कल्पना दत्त (1913-1995)</p>	<ul style="list-style-type: none"> - कल्पना दत्त एक क्रांतिकारी थीं जिन्होंने 1930 में सूर्य सेन की चटगांव शस्त्रागार लूट में भाग लिया था। - वह खुदीराम बोस की शहादत से प्रेरित हुईं और कोलकाता में महिलाओं के लिए अर्ध-क्रांतिकारी संगठन छत्री संघ से जुड़ गईं।
<p>लक्ष्मी सहगल (1914-2012)</p>	<ul style="list-style-type: none"> - कैप्टन लक्ष्मी सहगल आजाद हिंद फौज या इंडियन नेशनल आर्मी की सदस्य थीं। उन्हें महिला मामलों और झाँसी की रानी रेजिमेंट की जिम्मेदारियाँ दी गईं। - उन्होंने 1,500 महिला सैनिकों की एक रेजिमेंट बनाकर आईएनए में महिलाओं की भर्ती की। - वह दिल्ली में द रेड फोर्ट ट्रायल्स के लिए खड़ी हुईं।
<p>रानी गाइदिन्स्यू (1915-1993)</p>	<ul style="list-style-type: none"> - वह एक स्वतंत्रता सेनानी थीं, जो रोंगमेई जनजाति से थीं, जिन्हें काबुई के नाम से भी जाना जाता था, और नागाओं के बीच एक आध्यात्मिक और राजनीतिक नेता थीं। - उन्होंने मणिपुर, नागालैंड और असम में अंग्रेजों के खिलाफ सशस्त्र विद्रोह का नेतृत्व करने में प्रमुख भूमिका निभाई।

	- 13 साल की उम्र में, वह अपने चचेरे भाई हैपो जादोनांग के साथ हेराका आंदोलन में शामिल हो गईं। इस आंदोलन का उद्देश्य नागा आदिवासी धर्म को पुनर्जीवित करना और नागाओं के लिए स्व-शासन स्थापित करना था, जिससे ब्रिटिश शासन समाप्त हो गया।
उषा मेहता (1920-2000)	- 1928 में आठ साल की उम्र में उन्होंने साइमन कमीशन के खिलाफ एक विरोध मार्च में भाग लिया। - 14 अगस्त 1942 को, उन्होंने और उनके सहयोगियों ने एक गुप्त रेडियो स्टेशन, सीक्रेट कांग्रेस रेडियो की स्थापना की, जो 27 अगस्त को प्रसारित हुआ। इसने स्वतंत्रता आंदोलन के नेताओं को जनता से जोड़े रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। - सीक्रेट कांग्रेस रेडियो ने चटगांव बम छापा, जमशेदपुर हड़ताल और बिहार और महाराष्ट्र में समानांतर सरकारों के कामकाज जैसी महत्वपूर्ण घटनाओं का प्रसारण किया।
कनकलता बरुआ (1924-1942)	- वह भारत छोड़ो आंदोलन के सबसे कम उम्र के शहीदों में से एक थीं और उन्हें असम में एक प्रतिष्ठित दर्जा प्राप्त था। - 17 साल की उम्र में, उन्होंने 20 सितंबर, 1942 को गोहपुर पुलिस स्टेशन पर तिरंगा फहराने के लिए एक जुलूस में स्वतंत्रता सेनानियों के एक समूह, मुक्ति वाहिनी का नेतृत्व किया। दुखद रूप से, एक जुलूस के दौरान, उनकी जान चली गई।

विरोध प्रदर्शनों, जमीनी स्तर के प्रयासों और सविनय अवज्ञा में विविध महिलाओं की सक्रिय भागीदारी ने स्वतंत्रता आंदोलन के ताने-बाने को समृद्ध किया। ब्रिटिश अधिकारियों और भारतीय राष्ट्रवादियों ने महसूस किया कि महिलाओं की भागीदारी ने राष्ट्रीय संघर्ष को काफी मजबूत किया है। महत्वपूर्ण प्रगति के बावजूद, स्वतंत्रता पूर्व और स्वतंत्रता के बाद दोनों युगों में लैंगिक समानता की चुनौतियाँ सामने आईं, जो राजनीतिक परिवर्तन के साथ-साथ सामाजिक परिवर्तन की आवश्यकता को उजागर करती हैं। महिलाओं की भागीदारी ने मुक्ति और सुधार के परस्पर जुड़े मार्गों को उजागर किया, और स्थापित पितृसत्तात्मक मानदंडों और संरचनात्मक असंतुलन के खिलाफ स्थायी लड़ाई पर जोर दिया।

विचार-विमर्श

भारत में नारीवाद का विकास

- भारत में नारीवाद का विकास (Growth Of Feminism In India in Hindi) उस युग की एक अनिवार्य विशेषता थी। इसके बाद राष्ट्रीय आंदोलन में महिलाओं की भागीदारी (women's participation in national movement in Hindi) हुई।
- मागरिट कजिन्स जैसी आयरिश महिलाओं ने प्रतिनिधित्व के लिए भारतीय महिलाओं की तलाश का समर्थन किया। भारतीय महिला संघ की स्थापना (Indian Women's Association was established in Hindi) 1917 में एडविन मोंटागु को एक प्रतिनिधिमंडल भेजने के लिए की गई थी। समूह ने अनुरोध किया कि महिलाओं को मतदान का अधिकार दिया जाए।
- 20वीं सदी की शुरुआत के आसपास देशभर में महिला संगठनों और लड़कियों के स्कूलों की संख्या में वृद्धि हुई। महिलाओं की शिक्षा तक पहुंच और राष्ट्रीय आंदोलनों में उनकी महिलाओं की भागीदारी आपस में जुड़ी हुई है। कई महिलाएँ स्कूल जाते समय पहली बार राष्ट्रवादी आंदोलन से परिचित हुईं। [2,3,4]

आइए नीचे दी गई तालिका में महत्वपूर्ण महिला संगठनों की सूची (list of important women's organizations in Hindi) देखें।

संगठन	संस्थापक	वर्ष
महिला सामाजिक सम्मेलन (भारत महिला परिषद)	रमाबाई रानाडे	1904
भारत स्त्री महामंडल	सरला देवी चौधुरानी	1910
आर्य महिला समाज	पंडिता रमाबाई	1882
भारत में महिलाओं की राष्ट्रीय परिषद	महरीबाई टाटा	1925
अखिल भारतीय महिला सम्मेलन (AIWC)	मागरिट चचेरे भाई	1927

महिला समितियों और महिला साहित्य का उदय

- 20वीं सदी की शुरुआत में शहरों और कस्बों में कई महिला संगठनों का जन्म हुआ। ये स्कूल पहले बताए गए लड़कियों के स्कूलों के विपरीत, महिलाओं द्वारा शुरू किए गए थे। उस समय हवा में कुछ था जिसने महिलाओं को एक-दूसरे के साथ बातचीत करने के लिए प्रोत्साहित किया। वे एक साथ गतिविधियों में लगे रहे और अपने मानसिक और शारीरिक क्षितिज का विस्तार किया।
- हिरण्मयी देवी और सरला देवी ने महिला शिल्प समिति जैसे महिला संगठनों की स्थापना की। 1907 में, हिताशिनी सभा नामक एक महिला संगठन ने स्वदेशी उत्पादों के प्रदर्शन की व्यवस्था की। इसके अलावा, भारत महिला जैसे महिला प्रकाशन भी प्रमुखता से उभर रहे थे।
- गिरिजाबाई ने मैंगलोर में अपनी महिला सभा की स्थापना की। दो साल बाद, नेहरू की रिश्तेदार रामेश्वरी नेहरू ने भी इलाहाबाद में ऐसा ही किया। प्रयाग महिला समिति ने इलाहाबाद की महिलाओं को उनके घरों से निकालकर राजनीतिक बातचीत में लाने का प्रयास किया। जवाहरलाल नेहरू की बहन विजयलक्ष्मी पंडित ने 1917 में समिति की एक बैठक का ज्वलंत विवरण प्रदान किया।

आइए नीचे दी गई तालिका में महिला सेनानियों द्वारा रचित साहित्यिक कार्यों पर एक नज़र डालें।

किताब	लेखक
आंतरिक अवकाश, बाहरी स्थान	कमलादेवी चट्टोपाध्याय
स्त्री दर्पण	रामेश्वरी नेहरू
स्वर्णिम दहलीज	सरोजिनी नायडू
महिलाओं और पुरुषों के बीच एक तुलना	ताराबाई शिंदे
उच्च जाति की हिंदू महिला	पंडिता रमाबाई

खिलाफत और असहयोग आंदोलन में महिलाओं की भागीदारी

- भारतीय महिला संघ की स्थापना (Indian Women's Association was established in Hindi) से कुछ महत्वपूर्ण प्रगति हुई। खिलाफत आंदोलन की सफलता में अली बंधुओं की मां बी अम्मान के प्रयास महत्वपूर्ण थे। उन्हें बी अम्मां कहा जाता था, जो उनका पसंदीदा नाम था। उन्हें आबादी बानो बेगम के नाम से जाना जाता था।
- वह एक मजबूत महिला थीं जिन्होंने पितृसत्ता या पर्दा को अपने रास्ते में नहीं आने दिया। जब उनके बेटों को जेल में डाल दिया गया तो उन्होंने राजनीति में भाग लेना शुरू कर दिया क्योंकि उनका मानना था कि इस उद्देश्य को प्रभावित नहीं होना चाहिए। उन्होंने भारतीय महिला संघ की स्थापना (Indian Women's Association was established in Hindi) में योगदान दिया।
- असहयोग आंदोलन के दौरान एक और महत्वपूर्ण सफलता मिली। महिला को पहली बार जेल की सजा सुनाई गई। गांधीजी ने उनसे 1921 के अंत में अहमदाबाद में आयोजित कांग्रेस अधिवेशन में बड़ी संख्या में उपस्थित होने का आग्रह किया। अपने संस्मरण, "विद नो रिग्रेट्स" में कृष्णा हुथीसिंह हमें इस यात्रा का विस्तृत विवरण देती हैं।
- असहयोग आन्दोलन अपने चरम पर पहुँच गया। जल्द ही, इसके अधिकांश नेताओं को हिरासत में ले लिया गया। महिलाओं ने आंदोलन को बनाए रखने की जिम्मेदारी अपने ऊपर ले ली। उन्होंने सभाएँ आयोजित कीं, भारी भीड़ के सामने भाषण दिया और यहाँ तक कि जेल में भी प्रवेश किया। अवध किसान आन्दोलन में महिलाओं ने भी भाग लिया। बाबा रामचन्द्र की पत्नी जगगी देवी एक प्रमुख पात्र थीं। [3,4,5]

सविनय अवज्ञा आंदोलन में महिलाओं की भागीदारी

गांधीजी ने घोषणा की कि राष्ट्रीय आंदोलन में महिलाओं की भागीदारी (women's participation in national movement in Hindi) वर्जित कर दी गई है। महिलाओं को दांडी मार्च में भाग न लेने के लिए कहा गया। कमलादेवी चट्टोपाध्याय जैसी महिलाओं के लिए यह बहुत सुखद नहीं था। उन्होंने गांधीजी को आंदोलन में महिलाओं को शामिल करने के लिए मनाने में जल्दबाजी की। नतीजा यह हुआ कि सदियों का पर्दा टूट गया।

- सभी उम्र और सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि की महिलाएं सैकड़ों-हजारों की संख्या में उभरीं। उन्होंने उन सांस्कृतिक जंजीरों को आज़ाद कर दिया जो उन्हें इतने लंबे समय से बांधे हुए थीं। राष्ट्रीय आंदोलन में महिलाओं की भागीदारी (women's participation in national movement in Hindi) असाधारण थी। फिर भी, महिलाओं को परिणाम भुगतना पड़ा और उनमें से कई को जेल भेज दिया गया।
- महिलाएँ अब अपने पतियों को चुन रही थीं, और कुछ ने तो शादी न करने का भी विकल्प चुना। उनमें से कुछ ने ऐसे पतियों को भी छोड़ दिया जिनसे उनकी नहीं बनती थी। लिंग समीकरण बदल रहे थे। राष्ट्रीय आंदोलन में महिलाओं की भागीदारी (women's participation in national movement in Hindi) भी सामने आने लगी थी। उदाहरण के लिए, महात्मा गांधी के करीबी अनुयायी जीवत कृपलानी ने सुचेता मजूमदार से शादी की। उन्हें महात्मा गांधी के साथ-साथ अपने परिवार की आपत्तियों पर भी विचार करना पड़ा।
- दूसरा उदाहरण है जयप्रकाश नारायण और प्रभावती का। उन्होंने बच्चे पैदा न करने का निर्णय लिया और अपना जीवन देश के लिए समर्पित कर दिया।
- आसफ अली और उनकी पत्नी अरुणा गांगुली तीसरे उदाहरण हैं। सुचेता की तरह अरुणा ने भी शादी के वक्त अपने धर्म का पालन करने के लिए अपने से बड़े उम्र के व्यक्ति को चुना। सुचेता कृपलानी और अरुणा आसफ अली बाद में कांग्रेस के महत्वपूर्ण नेता बने। वे ऐसा इसलिए कर सकीं क्योंकि इन अपरंपरागत विवाहों ने महिलाओं को स्वतंत्रता प्रदान की थी। महादेवी वर्मा ने एक असंगत विवाह को समाप्त किया और एक पेशेवर करियर बनाया। वह एक ऐसी महिला का उदाहरण है जो असंगतता के कारण विवाह त्यागने का निर्णय लेती है।

भारत छोड़ो आंदोलन में महिलाओं की भागीदारी

- 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में उनका योगदान कहीं अधिक महत्वपूर्ण था। यह दिलचस्प है कि महिलाएं इस आंदोलन की बारीकियों को कितनी अच्छी तरह समझती हैं। महिलाओं ने भी विभिन्न तरीकों से नेतृत्व दिखाया। उन्होंने पर्चे छापे, भूमिगत साहित्य का प्रसार किया और कांग्रेस रेडियो संचालित किया।
- विठ्ठलभाई झावेरी और बाबूभाई खाकर, उषा मेहता के साथ मिलकर उन्होंने बॉम्बे में फ्रीडम रेडियो की स्थापना की। यह उसी वर्ष 3 सितंबर से 12 नवंबर तक चला।
- यहां तक कि सबसे असंभव स्थानों पर भी, भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान महिलाओं के जुलूस थे। मेरठ, कई असम, सागर और वर्धा क्षेत्रों में छात्राएं सक्रिय थीं। राष्ट्रीय आंदोलन में महिलाओं की भागीदारी (women's participation in national movement in Hindi) आश्चर्यजनक थीं।[4,5,6]

क्रांतिकारी और वामपंथी आंदोलनों में महिलाएँ

हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन (HSRA) ने क्रांतिकारी विचारों के लिए छत्र संगठन के रूप में कार्य किया। महिलाओं के लिए इन क्रांतिकारी संगठनों में शामिल होना कठिन था क्योंकि वे गुप्त रूप से काम करती थीं और उनका जीवन कठिन था। महिला प्रकाशवती ने कहा कि पुरुष महिलाओं को उनके संगठन में शामिल होने से हतोत्साहित करते थे।

- फिर भी, बंगाल में महिला क्रांतिकारी समूहों ने भौतिक संस्कृति क्लबों का आयोजन किया। वे गुप्त रूप से निषिद्ध क्रांतिकारी साहित्य भी पढ़ते थे। प्रीतिलता वादेदार और कल्पना दत्त अन्य उत्साही क्रांतिकारी महिलाओं में से थीं, जिन्होंने चटगांव शस्त्रागार छापे में भाग लिया था। वे क्रांतिकारी अभियानों में अधिक सक्रिय रूप से शामिल हो गये। राष्ट्रीय आन्दोलन में ऐसी महिलाओं की भागीदारी सराहनीय थी।
- भारतीय राष्ट्रवादी आंदोलन ने 1920 के दशक के अंत में एक मजबूत वामपंथी विकल्प का उदय देखा। कम्युनिस्ट पार्टी के अधिक कट्टरपंथी एजेंडे के कारण, कई महिलाओं ने इसमें शामिल होने का फैसला किया। नव-उदयमान सोवियत रूस कृषि में सुधारों के माध्यम से प्रभावशाली योजनाएँ बना रहा था। इसने पंचवर्षीय योजनाएँ भी शुरू कीं।
- रामपुर की हाजरा बेगम ने संकेत दिया कि वह गांधीवादी कार्यक्रम की ओर आकर्षित नहीं थीं। अपनी पढ़ाई को आगे बढ़ाने के लिए वह इंग्लैंड चली गईं और उन्हें सोवियत संघ की यात्रा करने का मौका मिला। उन्होंने दावा किया कि साम्यवाद के प्रति उनका बौद्धिक लगाव बहुत अधिक हो गया।
- 1940 के दशक में वामपंथी संगठनों में शामिल महिलाओं की संख्या कई गुना बढ़ गई। इसमें प्रगतिशील लेखक संघ जैसे संगठन भी शामिल हैं। दूसरों ने साहित्य, रंगमंच और संगीत में योगदान दिया। इनमें से कुछ महिलाएं रशीद जहां, इस्मत चुगताई और रेखा जैन थीं।

- कई हिस्सों में, इन सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों का उपयोग सामान्य वर्गों को संगठित करने के लिए किया गया था। यह और राष्ट्रीय आंदोलनों में महिलाओं की भागीदारी से पता चलता है कि 1940 के दशक तक महिलाएं कितनी आगे बढ़ चुकी थीं। उन्हें "इतिहास का प्रेरक" माना जाता था।[5,6,7]
- स्वदेशी आंदोलन ने भारतीय राष्ट्रवादी आंदोलन में महिलाओं की भागीदारी को उत्प्रेरित किया।
- शिक्षा, महिला संगठनों और बढ़ती राजनीतिक भागीदारी के माध्यम से, महिलाओं के जीवन में महत्वपूर्ण परिवर्तन देखे गए। राष्ट्रीय आंदोलन में महिलाओं की भागीदारी एक साहसी निर्णय था।
- कई महिलाएँ सड़कों पर, जेलों में और विधायिकाओं में पहुँच गईं। फिर भी, इस सबने उन्हें कई अलग-अलग तरीकों से शक्ति दी।

परिणाम

संसार में परमात्मा ने स्त्री-शक्ति का मुकाबला करने वाली कोई दूसरी शक्ति उत्पन्न नहीं की। वास्तव में भारतीय इतिहास में गौरवपूर्ण अध्याय के निर्माण कार्य में जितना सहयोग स्त्री शक्ति ने दिया है उतना अभी तक किसी ने नहीं दिया। आदिकाल में भी जब-जब देवासुर-संग्राम छिड़ा राक्षसी शक्ति को नष्ट करने के लिए दैवी शक्ति का आश्रय लिया गया। भारत के स्वाधीनता संग्राम में आक्रमणकारियों के विरुद्ध सदैव स्त्री शक्ति अग्रणी रही। अंग्रेजी शासन के विरुद्ध भारतीय स्वतंत्रता संग्राम अनेक दौरों से गुजरा। 1857 के विद्रोह में विश्व के सबसे महान् व शक्तिशाली साम्राज्य को चुनौती दी गई। 1857 के इस विद्रोह में झांसी की रानी लक्ष्मीबाई, बेगम हज़रत महल जैसी वीरांगनाओं का योगदान विशेष उल्लेखनीय रहा। गांधी युग में राष्ट्रीय आन्दोलन जन आंदोलन में परिवर्तित हो गया। इस युग में सभी धर्मों व सम्प्रदायों के अनुयायियों तथा जनता के प्रत्येक वर्ग ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया। इस कार्य में महिलाएँ भी पीछे नहीं रही। आरंभ से लेकर अंत तक उन्होंने न केवल शक्तिपूर्ण आन्दोलनों में सक्रिय भाग लिया अपितु वे क्रांतिकारी गतिविधियों में भी सक्रिय रहीं। गांधी जी भी राष्ट्रीय आन्दोलन में महिलाओं की भागीदारी के पूर्ण पक्षधर थे। राष्ट्रीय आंदोलन में भाग लेकर महिलाओं ने न केवल ब्रिटिश शासन के विरुद्ध तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त की बल्कि गिरफ्तार भी हुई। कुल मिलाकर महिलाओं के अंदर इस समय जो राष्ट्रचेतना पैदा हुई थी उसने यह सिद्ध कर दिया कि वे एक ऐसी राष्ट्रीय शक्ति है जो राष्ट्र की स्वाधीनता और अधिकारों के लिए सभी बंधनों से उन्मुक्त होकर लड़ सकती है। इस समय जिन स्त्रियों ने इतिहास में अपना नाम दर्ज कराया था उनमें एक पंक्ति उनकी भी थी जो गांधी जी के अहिंसावादी नीति का अनुसरण कर रही थीं और दूसरी पंक्ति उनकी थी जिन्होंने क्रांति का मार्ग चुना था। राष्ट्रीय आन्दोलन के इतिहास में अपने आप को महिलाओं ने विविध आयामों के साथ प्रस्तुत किया है।

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास महिलाओं के योगदान के उल्लेख के बिना अधूरा होगा। भारत की महिलाओं का बलिदान सर्वोपरि रहेगा। स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास महिलाओं के त्याग, निस्वार्थता, वीरता की गाथा से भरा पड़ा है। हममें से बहुत से लोग नहीं जानते कि ऐसी सैकड़ों महिलाएँ थीं जो अपने पुरुष समकक्षों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर लड़ीं। वे सच्ची भावना और अदम्य साहस के साथ लड़े। भारतीय महिलाएँ विभिन्न प्रतिबंधों से मुक्त हो गईं और अपनी पारंपरिक घरेलू भूमिकाओं और जिम्मेदारियों से बाहर निकल गईं। अतः स्वतंत्रता संग्राम और राष्ट्रीय जागरण में महिलाओं की भागीदारी अविश्वसनीय और प्रशंसनीय है। हालाँकि, पुरुष प्रधान समाज में महिलाओं के लिए योद्धा के रूप में लड़ना आसान नहीं है। हालाँकि महिलाओं ने ऐसे रूढ़िवादी लोगों की धारणा को बदलने की कोशिश की, जो सोचते थे कि महिलाएँ केवल घर के काम करने के लिए हैं। इसके अलावा, महिलाएँ न केवल अपने जीवन का बलिदान देती हैं बल्कि ऐसे मुद्दों का मुकाबला भी करती हैं। रानी लक्ष्मी बाई ऐसी महिलाओं में से एक थीं जिन्होंने सभी बाधाओं को कम करके ब्रिटिश भूमिका के खिलाफ लड़ाई लड़ी, इसलिए यह पेपर उस विरासत को उजागर करने का अधिकार देता है जो महिलाओं ने इतिहास में अपनी उग्र प्रकृति दिखाकर दिखाई।[6,7,8]

इसमें कोई संदेह नहीं कि भारतीय साम्राज्यवाद-विरोधी संघर्ष में महिलाओं ने बड़ी संख्या में भाग लिया। यदि हम अपने राष्ट्रीय आंदोलन में महिला नेताओं के नाम याद करें तो पाएंगे कि सूची बहुत लंबी है। राष्ट्रीय स्तर पर सरोजिनी नायडू, रानी लक्ष्मी बाई, विजयलक्ष्मी पंडित, कमलादेवी चट्टोपाध्याय और मृदुला साराभाई से शुरुआत करते हुए, हम केरल में एनी बैस्करिन और एवी कुट्टीमलुअम्मा, मद्रास प्रेसीडेंसी में दुर्गाबाई देशमुख, रामेश्वरी नेहरू और बी अम्मान जैसे प्रांतीय स्तर के नेताओं तक जा सकते हैं। उत्तर प्रदेश में, सत्यवती देवी और सुभद्रा जोशी दिल्ली में, हंसा मेहता और उषा मेहता बंबई में और कई अन्य। दरअसल, हमारे राष्ट्रवादी आंदोलन की प्रकृति ही ऐसी है कि क्षेत्रीय स्तर और अखिल भारतीय स्तर के नेताओं के बीच अंतर करना बहुत मुश्किल है। कई महिलाओं ने स्थानीय स्तर पर शुरुआत की और आगे चलकर राष्ट्रवादी केंद्र स्तर की खिलाड़ी बन गईं। इन सभी भारतीय महिलाओं के अलावा, एनी बेसेंट और मार्गरेट कजिन्स जैसी आयरिश महिलाएँ भी थीं, जो ब्रिटिश शोषण के आयरिश अनुभव का अपना ज्ञान भारत में लेकर आईं।

1757-1857 तक महिलाओं की भूमिका

- प्लासी (1757) के बाद, जॉन कंपनी ने लगातार उपमहाद्वीप पर अपनी राजनीतिक सर्वोच्चता स्थापित की, जो कि बक्सूर (1864) से शुरू होकर कई विद्रोहों, विद्रोहों, कृषि, सैन्य विद्रोह सहित विद्रोहों से प्रभावित थी। लेकिन जॉन कंपनी आमतौर पर मुगल सम्राट और बाद में पेशवा को भी पेंशन देने में सफल रही (बिठूर, 1818); शक्तिशाली नवाब हैदर अली, मैसूर के टीपू सुल्तान (1799) को कुचल दिया गया, अवध के नवाबों को दास बना दिया गया; लेकिन गुरिल्ला युद्ध में कर्नल मैल्कम को बिमाबाई होल्कर ने हरा दिया और रानी चैनम्मा ने महिला कौशल का प्रदर्शन करते हुए अपने छोटे से राज्य किचूर (कर्नाटक में) को कब्जे में लेने से सफलतापूर्वक बचाया।
- 1857 का विद्रोह इस मायने में अनोखा था कि कई महिलाओं ने साम्राज्य विरोधी संघर्ष का नेतृत्व किया, इस प्रकार वे प्रशासनिक, सैन्य प्रेषणों में शामिल हुईं और योद्धाओं, नेताओं, निर्णय निर्माताओं के रूप में दिखाई देने लगीं। शक्तिशाली स्त्री दृष्टिकोण उभरा, लेकिन रैकियन आधारित शाही, राष्ट्रवादी आख्यान कुछ विशेष लोगों पर केंद्रित थे - रानी लक्ष्मीबाई (झांसी), बेगम हज़रत महल की बहादुरी, लखनऊ, शाहजहाँपुर को सुरक्षित करने के असफल प्रयास, रानी विक्टोरिया की क्षमा की पेशकश को ठुकराना, नेपाल में शरण लेना पसंद करना; इस प्रकार न केवल सामाजिक रूप से आर्थिक रूप से हाशिए पर रहने वाले लोगों के असाधारण योगदान को धुंधला कर दिया गया, बल्कि ताई बाई (जालूआन), बैजाबाई, रानी तेजस्वनी और अनूपशहर की रानी चौहान की देशभक्ति, बलिदान को भी ग्रहण लगा दिया गया।
- द्वितीय विश्व युद्ध के बाद, 'नीचे से ऊपर' दृष्टिकोण और पारंपरिक/अपरांपरागत स्रोतों की एक श्रृंखला को तैनात करते हुए व्यापक इतिहास लिखने के लिए रूपरेखा, कार्यप्रणाली, दृष्टिकोण परिपक्व हुए, जिससे सबाल्टर्न स्कूल सहित सामाजिक वैज्ञानिकों को 'ग़दर' के बारे में लोकप्रिय जागरूकता पैदा करने में मदद मिली। और उदादेवी, झलकारीबाई, महावीरीदेवी, पन्नाधाय जैसी महिलाओं सहित अधीनस्थों की वीरता, बलिदान, देशभक्ति, नई राष्ट्रवादी वीरांगनाएं, लोककथाओं, कविताओं, गीतों, नाटकों, नौटंकीयों के माध्यम से पुष्टि की जाती हैं, जो दलित समाज के लिए विशेष गौरव की बात हैं, जिनका आह्वान बहुजन द्वारा किया जाता है। राजनीतिक समर्थन जुटाने के लिए समाज पार्टी।[7,8,9]
- यहां तक कि महिला सेवकों ने भी 'कमजोरों के हथियारों' को तैनात करते हुए, 'छिपे हुए प्रतिलेखों' पर काम किया, और सूक्ष्म, साहसी तरीकों से राष्ट्रवादी उद्देश्य को आगे बढ़ाया। इस प्रकार आगरा किले में क्रोधित रूथ कूपलैंड ने शिकायत की कि जिन लोगों ने उन पर हमला किया, उन्हें सलाम किया, वे राजद्रोह की प्रगति से प्रसन्न थे, अपने आकाओं की बेचैनी, उनके अपमान और पीड़ा को बढ़ा रहे थे। अधिकांश नौकरानियों ने काम छोड़ दिया, काम से विरत रहीं, जो बर्ची, उन्होंने बढ़ा हुआ वेतन लिया और विशेष रूप से अपमानजनक; अपने अतिरिक्त पैसे को समलैंगिक पोशाकों, सोने, चाँदी के गहनों में खर्च करते थे, जिन पर वे इतराते थे, और मासूमियत का मज़ाक उड़ाते हुए सवाल करते थे कि 'तुम्हारे गहने कहाँ हैं!'

1857 के बाद

- 1857 के बाद, शांति, 'रचनात्मक साम्राज्यवाद' का काल, जिसने महिलाओं की शिक्षा को प्रोत्साहित किया, 1830 के दशक से भारतीय उदारवादियों, सुधारकों, सुधारवादी संगठनों द्वारा समर्थित एक मुद्दा। इस प्रकार आत्मीय सभा, ब्रह्मो समाज, आर्य समाज, प्रार्थना समाज, थियोसोफिकल सोसायटी, राम कृष्ण मिशन, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (1885 से) ने राष्ट्रीय उत्थान को महिलाओं की शिक्षा, अधिकारों, सम्मान से जोड़ा, यह याद दिलाते हुए कि विदेशी प्रभुत्व का प्रमुख नैतिक औचित्य महिलाओं का था निम्न, उत्पीड़ित स्थिति, निरक्षरता जिसने लगभग आधी भारतीय आबादी को अपने लिए सोचने या कार्य करने के लिए अयोग्य बना दिया, इस प्रकार भारत को स्वयं शासन करने के लिए अयोग्य बना दिया।
- इनसे महिलाओं की शिक्षा को प्रोत्साहन, उनके संगठन की सदस्यता, विविध राष्ट्रवादी परियोजनाओं में भागीदारी राष्ट्रवाद के प्रसार की कहानी बन गई। महिलाओं को राष्ट्रीय गौरव, प्रबुद्धता या पिछड़ेपन के महत्वपूर्ण प्रतीकों के रूप में प्रस्तुत किया गया था, इस बात पर जोर दिया गया था कि पारंपरिक रूप से महिलाएं कभी भी इतनी निष्क्रिय, मूर्ख, अधीन नहीं थीं जैसा कि आधिपत्यवादी शाही आख्यानों द्वारा प्रस्तुत किया गया था, हाल के शोधों द्वारा दोहराया गया एक दृष्टिकोण जो परिवार के भीतर महिलाओं की शक्ति, उनके संघर्षों, आलोचना को उजागर करता है।, प्रतिरोध, उन्होंने विभिन्न सांस्कृतिक, राजनीतिक, शैक्षिक संदर्भों में पुरुष प्रधान सामाजिक-आर्थिक, राजनीतिक, शक्ति संबंधों को कैसे तोड़ा, बातचीत की। इस प्रकार विधवाओं ने विरासत के अधिकारों, गरिमा को लागू करने के लिए कानून अदालतों का सहारा लिया, अपने पति की संपत्ति के लिए लड़ाई लड़ी, यहां तक कि दमनकारी पतियों, ससुराल वालों से तलाक के लिए भी;

अकाल के दौरान, महिलाओं ने उपनिवेशवाद की आलोचना करते हुए राहत के लिए सरकार से याचिका दायर की, जिसने उनके शानदार अतीत से समझौता किया।

- शिक्षा के प्रसार के साथ इस तरह की गतिशीलता तेज हो गई, जो हालांकि धीमी, विरोध और जटिल परिस्थितियों से भरी हुई थी, फिर भी महिलाओं को, भले ही संख्या में कम, विशेष रूप से बॉम्बे, पूना, कलकत्ता, मद्रास और इलाहाबाद जैसे शहरी विश्वविद्यालय केंद्रों में शिक्षा प्राप्त करने में सक्षम बनाया, जिससे छोटी, दृश्यमान स्थिति पैदा हुई। महिला बुद्धिजीवियों के समूह विज्ञान-प्रौद्योगिकी, आधुनिकीकरण की प्रक्रियाओं से अवगत हुए, जिन्होंने सोचने और जीने के तरीकों को बदल दिया। इस प्रकार शिक्षा ने चौदह वर्षीय मुक्ताबाई को, जोतिबा फुले के स्कूल में (1855 में) एक मांग लड़की थी, प्रमुख ब्राह्मणवादी व्यवस्था (मांग महाराज्या दुखा वियासेयी) द्वारा निचली जाति की महिलाओं के साथ होने वाले अन्याय, कूरता को उजागर करने के लिए तैयार किया; तरारबाई शिंदे ने 'स्त्री-पुरुष तुलना' (पुरुषों और महिलाओं के बीच तुलना) की पटकथा लिखी; और फुले की पत्नी सावित्री ने प्रचलित सामाजिक-राजनीतिक स्थितियों, पितृसत्तात्मक व्यवस्था की आलोचना की, शिक्षा की कमी को मुख्य निर्धारक के रूप में रेखांकित किया जिसने महिलाओं की क्षमता, अधिकारों को दबा दिया।
- सभी बाधाओं को पार करते हुए कादंबिनी गांगुली, चंद्रमुखी बसु, ब्रिटिश साम्राज्य की पहली महिला स्नातक बनीं (कलकत्ता विश्वविद्यालय, 1883)। कादंबिनी, हैमवती सेन, आनंदीबाई चिकित्सक बन गईं। आनंदीबाई, सुधारक पंडिता रमाबाई ने पेशेवर आकांक्षा को आगे बढ़ाने के लिए क्रमशः संयुक्त राज्य अमेरिका और इंग्लैंड की यात्रा की। रमाबाई ने विभिन्न संस्कृतियों में विवाह किया, ईसाई धर्म अपना लिया, भारत लौट आईं, महिलाओं के सामान्य उत्थान, शिक्षा, विशेषकर विधवाओं की शिक्षा के लिए अभियान चलाया। ऐसे उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए उन्होंने महिला समाज की स्थापना की, और न्यायमूर्ति रानाडे की सहायता से 'द आर्थन वूमेन एसोसिएशन' की स्थापना की। एक अन्य महाराष्ट्रीयन रमाबाई रानाडे ने समान उद्देश्यों के साथ सेवा सदन की स्थापना की [8,9,10]
- बंगाल में बेगम रोकैया सकाहावत हुसैन ने मुस्लिम महिलाओं के उत्थान के लिए काम किया। लेखिका स्वर्णा कुमारी घोषाल ने पारंपरिक हस्तशिल्प को बढ़ावा देने के लिए सखी समिति (1886) की स्थापना की, सरला घोषाल ने कलकत्ता में एक व्यायामशाला की स्थापना की (1902); सरला देवी चौदुरानी की भारत स्त्री महामनादल (1910), जिसकी पूरे भारत में शाखाएँ थीं, ने महिला शिक्षा को बढ़ावा दिया और अन्नसुइयाबाई काले ने भगिनी मंडल (1925) की शुरुआत की, प्रांतीय महिला संघ सम्मेलन का आयोजन किया और इस प्रकार महिलाओं को सशक्त बनाया जिनकी सक्रियता स्पष्ट रूप से बढ़ गई। शिक्षित महिलाओं ने भी अंग्रेजों द्वारा भारतीयों की पराधीनता पर सवाल उठाए, आलोचना की और निंदा की, उन्हें अपने देश में प्रतिनिधि शासन पर बहुत गर्व था।
- बीसवीं सदी की शुरुआत में महिलाएं चाय, कॉफी के बागानों, विभिन्न खदानों, जूट और कपास मिलों में खेतिहर मजदूर के रूप में काम करने लगीं। बसंती देवी, कॉर्नेलिया सोराबजी, सरोजिनी नायडू, लाडोरानी जुत्शी, एनी बेसेंट, मुथुलक्ष्मी रेड्डी, मितैन टाटा लैम, पेरिन कैप्टन, फ्रेडा बेदी, दुर्गाबाई जोशी, महादेवी वर्मा, अपशब्दों, विकृत मानसिकता के आक्षेपों के बावजूद राजनीतिक कार्यकर्ता, वकील, विधायक बनीं। सुधारवादियों, कवियों, लेखकों ने क्रांतिकारी, ट्रेड यूनियन गतिविधियाँ अपनाईं।
- विदेशों में भारतीय युवाओं के लिए एक प्रतिष्ठित शिस्सियत भीकाजी कामा ने 'फ्री इंडिया सोसाइटी' और 'वंदे मातरम' पत्रिका शुरू की, भारत की आजादी के लिए बड़े पैमाने पर यात्रा की, 1907 में स्टटगार्ट (जर्मनी) में अंतर्राष्ट्रीय समाजवादी सम्मेलन में राष्ट्रीय ध्वज फहराया। भीकाजी ने सावरकर को उनकी अग्रणी पुस्तक 'इंडियन वॉर ऑफ इंडिपेंडेंस' को प्रकाशित करने में भी मदद की, जो यह सुझाव देने वाली लगभग पहली पुस्तक थी कि 1857 स्वतंत्रता के लिए एक एकीकृत राष्ट्रीय युद्ध था, जिसे प्रकाशन से पहले ही ब्रिटेन/भारत में प्रतिबंधित कर दिया गया था। लेकिन भीकाजी ने अंततः हॉलैंड में गुप्त रूप से, बिना किसी आवरण के पुस्तक प्रकाशित की, फिर इसे भारत में तस्करी कर लाया। इस तरह के साहसी, गुप्त कृत्यों को हालांकि तत्काल दायरे के बाहर बमुश्किल मान्यता दी जाती है, एकजुट प्रतिरोध, संघर्ष, स्त्री शक्ति का प्रदर्शन, दृष्टिकोण, स्त्रीत्व को उनकी क्षमता, आकांक्षाओं की प्राप्ति में बाधा न बनने देने का उनका संकल्प, इस प्रकार स्त्री हितों को फिर से परिभाषित करना, समेकित करना, एक अमिट छोड़ देना महिलाओं के सवाल पर निशान।

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस

- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (1885) के गठन ने सबसे महत्वपूर्ण अखिल-राष्ट्रवादी मंच प्रदान किया, जिसने महिलाओं को विविध राष्ट्रीय परियोजनाओं में पहल करने, समान वैचारिक बंधनों, उद्देश्यों, दृष्टिकोण में बंध कर एक साथ काम करने के लिए

प्रोत्साहित किया, जिसके परिणामस्वरूप राष्ट्रीय एकीकरण हुआ। जिला कांग्रेस समितियों ने उदाहरण के लिए महिला संघों के साथ संबंध बनाए - राष्ट्रीय स्त्री संघ, राष्ट्रीय स्त्री सभा, देवदासी संघ, देश सेविका, भारत स्त्री महामनदल, जिनके सदस्यों को अनिवार्य रूप से जिला कांग्रेस का सदस्य होना पड़ता था, जिसने कांग्रेस के लिए एक मजबूत महिला आधार तैयार किया। कांग्रेस के प्रत्येक आम सत्र में महिला प्रतिनिधियों, पर्यवेक्षकों की बढ़ती संख्या ने भाग लिया (1889 में स्वर्णा कुमारी घोषाल, कादंबरी गांगुली द्वारा)। इस तरह के विकास का मतलब है कि महिलाएं घरेलू स्थानों से बाहर, धार्मिक क्षेत्रीय, भाषाई, विभाजनों में महिलाओं से मिलती थीं। उन्होंने विचारों का आदान-प्रदान किया, स्त्री संबंधी समस्याओं की जांच की, महिलाओं के लिए एकमात्र स्कूल, अस्पताल, औषधालय, आश्रय गृह बनाए; सूक्ष्म सामाजिक नेटवर्क के अलावा, संघ जो अक्सर मैक्रो, छत्र संघों में विलीन हो जाते हैं - महिला भारतीय संघ (1917), भारतीय महिलाओं के लिए राष्ट्रीय परिषद (1925), अखिल भारतीय महिला सम्मेलन (1927), जिसने एक दशक के भीतर कई उप समितियों की स्थापना की - श्रम, उद्योग, बाल विवाह, अफ्रीम विविध कारणों में स्त्री सक्रियता का संकेत देते हैं।

- (1905) में बंगाल का विभाजन हुआ, जिसका उद्देश्य मुस्लिम बहुल पूर्व और हिंदू बहुल पश्चिम बंगाल के बीच दरार पैदा करना था, जिससे बड़े पैमाने पर विभाजन विरोधी आंदोलन को जन्म मिला, जिसमें व्यापक सामाजिक-आर्थिक, राजनीतिक मुद्दों को भी शामिल किया गया। इसने स्वदेशी, राष्ट्रीय शिक्षा, कुटीर उद्योगों की स्थापना, स्वदेशी संस्थानों पर जोर दिया और अन्यायपूर्ण कानूनों के प्रति निष्क्रिय प्रतिरोध का समर्थन किया, जो इस प्रकार गांधीवादी परंपराओं, एजेण्डे का अग्रदूत था। बंगाल में बसंती, उर्मिला, सुनीति देवी, पत्नी, बहन, अनुभवी वकील, स्वतंत्रता सेनानी सी.आर.दास की भतीजी के नेतृत्व में लाखों महिलाएं हड़तालें, विरोध मार्चों, विदेशी वस्तुओं/शराब की दुकानों पर धरना देने, गिरफ्तारी देने, देशभक्ति के गीत गाने, अलाव जलाने में शामिल हुईं। विदेशी वस्तुएं राष्ट्रवाद के प्रति उनकी प्रतिबद्धता को दर्शाती हैं, जिससे पूरे भारत में महिलाएं प्रेरित होती हैं।
- प्रथम विश्व युद्ध के फैलने से भारत में नागरिक स्वतंत्रता, आंदोलनात्मक राजनीति पर प्रतिबंध लग गया। लेकिन आयरिश महिला श्रीमती एनी बेसेंट ने अपने होम रूल आंदोलन के माध्यम से भारतीय राजनीति को कट्टरपंथी बना दिया, लगातार भारत की अधीनता का विरोध किया, स्वराज्य के लिए धर्मयुद्ध किया। उनकी अध्यक्षता (1917) में, कांग्रेस पूर्ण स्वशासन के पक्ष में थी। इसके अलावा, उन्होंने महिलाओं के मुद्दों पर ध्यान केंद्रित किया, महिलाओं की सदस्यता, सक्रियता, शिक्षा को प्रोत्साहित किया और बनारस के महाराजा की सहायता से सेंट्रल हिंदू कॉलेज की स्थापना की।
- एनी बेसेंट, अन्य प्रतिबद्ध महिलाओं ने भी भारतीय महिलाओं के लिए सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार के विस्तार के लिए संघर्ष किया। 1918 में मुंबई में विशेष कांग्रेस सत्र में, सरोजिनी नायडू ने शिक्षा के विकास, महिलाओं के बीच नागरिक चेतना, राजनीतिक प्रक्रियाओं के साथ उनकी अधिक भागीदारी, नगरपालिका परिषदों, अन्य स्थानीय निकायों में सेवा को रेखांकित किया, इसलिए वे मतदान के अधिकार की हकदार थीं। इसी तरह के तर्कों का हवाला देते हुए सरला देवी चौदुरानी ने भी वयस्क मताधिकार की मांग करते हुए एक प्रस्ताव पारित किया। इससे इनकार करने पर महिलाएं क्रोधित हो गईं। राजकुमारी सोफी दलीप सिंह (राजा रणजीत सिंह की पोती), लेडी हेराबाई टाटा, लंदन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स से स्नातक मितियान टाटा-लैम, श्रीमती राधाबाई सुब्रायन, श्रीमती शाह नवाज़, श्रीमती मुथुलक्ष्मी रेड्डी, सरला रे, डोरोथी जिनारजादास, मार्गरेट कजिन्स ने वर्षों तक विरोध सभाएं आयोजित कीं, प्रस्ताव पारित किए, पत्र लिखे, याचिकाएं लिखीं और महिलाओं के समग्र सशक्तिकरण के लिए मतदान के अधिकार को आवश्यक बताया।
- परिणामस्वरूप 1921-30 के बीच प्रांतीय विधायिकाओं ने शैक्षिक और संपत्ति योग्यताओं के अधीन महिलाओं को मतदान का अधिकार दिया और भारत सरकार अधिनियम (1935) में महिलाओं के लिए सीटें 'आरक्षित' कर दीं। पहले प्रांतीय चुनावों (1937) तक, लगभग 4.25 मिलियन महिलाओं ने वोट देने का अधिकार हासिल कर लिया था और उसका प्रयोग किया था।
- लेकिन यह उद्यमशील मोहन दास करमचंद गांधी ही थे, जिन्होंने स्थानीय, राष्ट्रीय स्तर पर सामाजिक-राजनीतिक परिवर्तन लाने के लिए पारिवारिक, सामुदायिक, राष्ट्रवादी परियोजनाओं की सेवा करने की महिलाओं की क्षमताओं, क्षमता का आकलन, कुशलता से उपयोग किया। गांधीवादी राजनीतिक परंपराओं में परिष्कृत हथियार, गोला-बारूद, सैन्य प्रशिक्षण या जटिल तंत्र की आवश्यकता नहीं थी, बल्कि अधीनता के प्रति दृढ़ प्रतिरोध, अहिंसक, शांतिपूर्ण सत्याग्रह के माध्यम से क्रूर बल, आत्म अनुशासन, प्रेम, अहिंसा के माध्यम से व्यक्तियों, प्रणालियों को बदलने की क्षमता पर जोर दिया गया था। महिलाओं ने जो बलिदान दिया, वह स्वतंत्रता संग्राम का नेतृत्व करने के लिए आदर्श रूप से उपयुक्त है। हिंदू धर्मग्रंथों, पौराणिक परंपराओं सहित विभिन्न स्रोतों से प्रेरणा लेते हुए, गांधी ने महिलाओं को जननी, शक्ति, लक्ष्मी के रूप में प्रतिष्ठित किया; सीता, दुर्गा, द्रौपदी, दमयंती, सवितिरी, शक्तिशाली, महान व्यक्तित्व, सदाचार से संयमित लोगों के उदाहरण दिए गए; इन्होंने मानवीय संबंधों में अनुचितता का विरोध किया, स्त्री हित और सम्मान से समझौता करने के बजाय पीड़ा, मृत्यु

को चुना। उन्होंने एक मजबूत, स्वतंत्र भारत के निर्माण के लिए ऐसे स्त्री साहस, सम्मान का आह्वान किया, जिसने राष्ट्रवादी विचार में अपना रास्ता बना लिया।

- भारत 'माँ' थी जिसे आज़ाद होना था, यह विषय सबसे प्रसिद्ध रूप से पहले बंकिम चंद्र चटर्जी के 'आनंद मठ' में प्रस्तुत किया गया था। वास्तव में एक गतिशील भूमिका, जो घरेलू कामकाज तक ही सीमित नहीं थी, ने महिलाओं के अधिकारों, शिक्षा, सशक्तिकरण के लिए तीव्रता प्रदान की। इस तरह की वकालत ने सामाजिक रूप से सुधारात्मक एजेंडे-सांप्रदायिक सद्भाव, दलित उत्थान, अधिकारों के साथ मिलकर, भेदभावपूर्ण उपचार के अधिकांश रूपों का विरोध करते हुए राष्ट्रीय आंदोलन को सामाजिक, लैंगिक समावेशी, नैतिक रूप से उत्थानकारी आयाम प्रदान किया। गांधीवादी परंपरा ने सबसे कमजोर, सबसे गरीब अशिक्षित महिलाओं के लिए भी सामरिक स्थान बनाए, तीन मुख्य गांधीवादी आंदोलनों में प्रतिबिंबित शांतिपूर्ण लेकिन दृढ़ प्रतिरोध के कई रूपों के माध्यम से उनकी सक्रियता को बढ़ाया; इसमें महिलाओं ने उपनिवेशवादियों का मुकाबला किया, परिवर्तन की एजेंट बनकर उभरीं।[9,10,11]

असहयोग आंदोलन:

- प्रथम विश्व युद्ध के बाद, भारतीयों को राज से पर्याप्त राजनीतिक रियायतों की उम्मीद थी, जिसने इसके बजाय कठोर रोलेट अधिनियमों को बढ़ाया, जिसने नागरिक स्वतंत्रता, मौलिक अधिकारों को नष्ट कर दिया; इसके बाद पंजाब में मार्शल लॉ, क्रूर जलियांवाला बाग नरसंहार, रेंगने वाले आदेश, सार्वजनिक कोड़े मारने का उत्प्रेरक प्रभाव पड़ा, कई महिलाओं का नरसंहार किया गया, अपंग किया गया, विधवा किया गया, बच्चों को खोया गया; अवांछित मोंटेगू-चेम्सफोर्ड अधिनियम ने चोट को और बढ़ा दिया। गांधी ने इन शिकायतों को खिलाफत, स्वदेशी के साथ शामिल किया और स्वराज्य का आह्वान किया। गांधीजी ने तर्क दिया कि यदि भारतीय, व्यक्तिगत और सामूहिक रूप से, शांतिपूर्वक उपनिवेशवादियों के साथ असहयोग करेंगे, तो शासन करना असंभव हो जाएगा।
- जनवरी 1921 में प्रारंभ हुए असहयोग आंदोलन ने राष्ट्रीय पटल पर सत्याग्रह का परीक्षण किया। इसकी शुरुआत भारतीयों द्वारा सुधारित परिषदों की सदस्यता से हटने, कानून अदालतों, स्कूलों, विश्वविद्यालयों, सरकार द्वारा संचालित अस्पतालों, औषधालयों का बहिष्कार करने, सरकारी पदों से इस्तीफा देने, अनुचरों, कुलियों द्वारा उपनिवेशवादियों के लिए काम करने से इनकार करने और इस प्रकार संकट पैदा करने से हुई। उदाहरण के लिए महिलाओं का नेतृत्व करने वाली गांधी की पत्नी कस्तूरबा थीं - अनुशासित, शांतिपूर्ण, लचीली, गांधीवादी घर चलाने वाली, नियमित रूप से चरखा बुनने वाली, खादी पहनने वाली, आर्थिक, नैतिक रूप से स्त्री आत्मनिर्भरता का प्रदर्शन करने वाली। दक्षिण अफ्रीका से शुरू होकर भारत छोड़ो आंदोलन तक, जब उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया और जेल में उनकी मृत्यु हो गई, तब तक गांधीजी के कई परीक्षणों के दौरान वह गांधीजी की सबसे बड़ी सहायता बनी रहीं।
- बसंती, उर्मिल, सुनीत देवी, हेमपराभा मजूमदार ने अपने समृद्ध विभाजन विरोधी अनुभव का लाभ उठाते हुए बंगाल में महिलाओं का नेतृत्व किया। बसंती बंगाल कांग्रेस कमेटी (1921-22) की अध्यक्ष भी थीं, उनका नैतिक कद बहुत ऊंचा था। इन्होंने न केवल स्वदेशी, स्वराज्य को अपनाया, बल्कि महिलाओं के समग्र उत्थान, शिक्षा को भी अपनाया, इसलिए महिलाओं के सामान्य समूह तक उनकी पहुंच और प्रभाव था, जिन्हें उन्होंने असहयोग में समाजीकृत किया। बड़ी संख्या में छात्र और सिख महिला स्वयंसेवक शामिल हुए। बसंती, सुनीति, उर्मिला देवी की गिरफ्तारी से सामाजिक-धार्मिक, वैचारिक संबद्धताओं में इतना व्यापक आक्रोश फैल गया कि पुलिस ने लोकप्रिय अशांति बढ़ने के डर से उन्हें कुछ ही घंटों में रिहा कर दिया, महिलाओं ने लगभग तुरंत ही अपनी गतिविधियाँ शुरू कर दीं।
- पंजाब में लाडो रानी जुत्शी, कुमारी लज्जावती (धुनी चंद, लाहौर की पत्नी), श्रीमती। पारबती देवी (मृत्यु लाजपत राय), पुष्पा गुजराल, सरला देवी चुदुरानी ने टकराव का नेतृत्व किया। उनके उदाहरण से प्रोत्साहित होकर मई 1921 में पांच सौ महिलाओं ने खुद को रावलपिंडी कांग्रेस कमेटी के सदस्यों के रूप में नामांकित किया, जिनकी संख्या लगातार बढ़ती गई। संयुक्त प्रांत में नेहरू खानदान की महिलाओं ने उदाहरण पेश किया। पंडित मोतीलाल नेहरू की पत्नी स्वरूप रानी, कमला नेहरू, विजय लक्ष्मी पंडित, कृष्णा नेहरू-हल्दी सिंह, उमा नेहरू सबसे आगे थीं। उन्होंने चरखा चलाया, बुनाई की, खादी पहनी, विरोध प्रदर्शनों, रैलियों में भाग लिया, बैठकों को संबोधित किया और आयोजित किया, स्वराज्य और आनंद भवन को देशभक्ति के पालने में बदल दिया, जहां स्वतंत्रता सेनानियों को आतिथ्य, सैन्य सहायता प्रदान की गई।
- बिहार में, सरला देवी, सावित्री देवी (हजारीबाग) ने इसी तरह की गतिविधियों के माध्यम से हजारों महिलाओं को एकजुट किया, जो घर-घर जाकर गांधीवादी आदर्शों, खादी और विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार के बारे में जागरूकता फैला रही थीं।

अन्यत्र सरोजिनी नायडू ने अपना कैसर-ए-हिन्द पदक (1921) लौटा दिया। दुर्गावती देशमुख, मुथुलक्ष्मी रेड्डी, राजकुमारी अमृत कौर, सुचेता कृपलानी, एस. अंबुजम्मल, कृष्णाबाई राम, पद्मजा नायडू, कमलादेवी चट्टोपाध्याय ने महिलाओं को राष्ट्रीय हित में शामिल होने के लिए प्रेरित किया।

- खिलाफत नेताओं मौलाना मोहम्मद और शौकत अली की मां बी अम्मान, श्रीमती हाजी यूसुफ शोभानी, श्रीमती मजहर उल हक स्वदेशी, हिंदू-मुस्लिम एकता के प्रबल समर्थक थे, उन्होंने पूरे भारत में महिलाओं की बैठकों को संबोधित किया - संयुक्त प्रांत, पटना, बॉम्बे, पंजाब, मुस्लिम महिलाओं को मुख्यधारा के राष्ट्रवाद में एकजुट करना। बी, कभी-कभी अपने चेहरे को उजागर करके बैठकों को संबोधित करती थीं, जिससे सामाजिक रूप से साहसिक बयान दिया जाता था। अहमदाबाद में अखिल भारतीय महिला सम्मेलन में, जिसमें छह हजार से अधिक महिला प्रतिनिधियों ने भाग लिया, बी ने महिलाओं से कांग्रेस स्वयंसेवक बनने, खादी कताई के माध्यम से आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर होने, विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार करने, खिलाफत-असहयोग के लिए धन जुटाने का आग्रह किया और महिलाओं पर विचार किया। शराब की दुकानों पर धरना देने के लिए विशेष रूप से उपयुक्त। उत्साहित महिलाओं ने स्वेच्छा से अपने कीमती आभूषणों को त्याग दिया, श्रीमती मजहर उल हक ने स्वतंत्रता के प्रति प्रतिबद्धता प्रदर्शित करते हुए चार हीरे की चूड़ियाँ दान कीं।
- इस प्रकार महिलाओं ने पूरे भारत में गांधीवादी आदर्शों से जुड़कर संघर्ष किया, हालांकि गांधी के प्रति उनकी धारणाएं अक्सर भिन्न-भिन्न, धुंधली थीं, जैसा कि उनके उद्देश्यों और तरीकों में था। लेकिन महिलाओं की भागीदारी दिखाई देने के बावजूद जन आधारित नहीं थी, शहरी, शिक्षित, मध्यम वर्ग तक ही सीमित थी, हालांकि देवदासियों, वेश्याओं ने भी गांधी बाबा के फंड में योगदान दिया था। जहां पहले से मौजूद महिला संस्थाएं, समाज, संगठनात्मक संरचनाएं थीं, वहां लैंगिक सक्रियता मजबूत थी। लेकिन यहां भी महिलाओं को स्वयंसेवी आंदोलनों में शामिल नहीं किया गया, लैंगिक समानता अभी भी बहुत दूर की बात है, हालांकि खादी पहने महिला सत्याग्रही, निषेधाज्ञा के बावजूद उग्र भाषण दे रही हैं, शांतिपूर्ण राजनीतिक विरोध प्रदर्शनों, मार्च, रैलियों में भाग ले रही हैं, शराब, विदेशी सामान की दुकानों पर धरना दे रही हैं।, उपनिवेशवाद-विरोधी साहित्य वितरित किया, ऐसी गतिविधियाँ पूरे भारत में दोहराई गईं, जो कि सत्याग्रह सप्ताह के दौरान क्रिस्टलीकृत हुईं। (6-13 अप्रैल, 1920)। महिलाओं की भागीदारी अक्सर पितृसत्ता की अवज्ञा में होती थी, लेकिन अक्सर महिलाओं की गतिशीलता, क्षमता, देशभक्ति की सराहना करने वाले पुरुषों द्वारा भी इसे बढ़ावा दिया जाता था।
- असंख्य महिलाओं ने ग्राम पुनर्निर्माण परियोजनाओं, नागरिक मामलों में भाग लेकर अप्रत्यक्ष रूप से योगदान दिया, आर्थिक आत्मनिर्भरता प्राप्त करने के लिए आदर्श तंत्र के रूप में चरखा, खादी का संदेश फैलाया, अपने घरों में स्वतंत्रता सेनानियों का स्वागत किया, उनके लिए खाना बनाना, काम चलाना, विभिन्न के बीच काम का समन्वय करना प्रभात फेरियों में भाग लेते हुए, देशभक्ति के गीत गाते हुए समूह; उन्होंने अपने छोटे बच्चों को भारतीयों की वीरता, बलिदान, साहस की कहानियाँ सुनाई, इस प्रकार उनके बच्चों में मातृभूमि के प्रति गौरव और प्रेम पैदा हुआ। मेरी साक्षर दादी जैसी कई महिलाओं ने अपने पत्रों की शुरुआत नमस्ते, प्रणाम से नहीं, बल्कि 'वंदे मातरम' से की और बाद में 1940 के दशक से महिलाओं ने अपने पत्रों को पहले से 'जय हिंद' के साथ निर्धारित किया, जो दर्शाता है कि राष्ट्रवाद का प्रसार, लिंग आधारित योगदान की गहराई अभी भी ठीक से काम नहीं कर रही है। मूल्यांकन किया गया।
- असहयोग ने आत्म-मूल्य की भावना पैदा की, महिलाओं को राष्ट्रवादी संघर्ष में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका के लिए जागृत किया, उन्हें स्वायत्त कार्रवाई के लिए जगह बनाने के लिए प्रेरित किया, और कई महिला राष्ट्रवादी संगठनों ने राष्ट्रवाद के बारे में जागरूकता फैलाई।

नमक सत्याग्रह

- असहयोग के बाद उपनिवेशवाद के प्रति प्रतिरोध की आग लगातार सुलगती रही, जो सविनय अवज्ञा (1930-32) के दौरान फिर से भड़क उठी, जिसमें करों का भुगतान न करना भी शामिल था। कांग्रेस ने विशेष रूप से महिलाओं से चरखा चलाने, बुनाई करने, पहनने, खादी बेचने, विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार करने, स्थानीय दमनकारी कानूनों को तोड़ने और करों का भुगतान न करने की अपील की।
- नमक सत्याग्रह गांधीजी का मास्टर स्ट्रोक था। नमक खाना पकाने में नियमित रूप से उपयोग किया जाने वाला एक आवश्यक घटक था, इसलिए यह स्त्री-उन्मुख था। प्रकृति द्वारा प्रदत्त होने के कारण इसकी लागत कुछ भी नहीं थी, फिर भी कर लगाया जाता था, इसके निर्माण पर उपनिवेशवादियों का एकाधिकार था, जिसे गांधीजी ने दांडी समुद्र तट पर नमक का निर्माण करके तोड़ने का निर्णय लिया। मार्च 6 अप्रैल 1930 को साबरमती आश्रम से शुरू हुआ, लेकिन केवल सत्तर

महिला स्वयंसेवकों के साथ। इस तरह के खराब प्रतिनिधित्व का सरोजिनी नायडू ने कड़ा विरोध किया, जिन्होंने महिलाओं की समान, मजबूत भागीदारी पर जोर दिया। सरोजिनी कवियत्री, कांग्रेस की पहली महिला अध्यक्ष (1925), गोलमेज सम्मेलन में भागीदार और स्वतंत्रता के बाद उत्तर प्रदेश की पहली महिला राज्यपाल थीं। पूरे सत्याग्रह में गांधीजी के साथ उनकी उपस्थिति ने भारतीय सामाजिक क्षेत्र की लाखों महिलाओं को इसमें शामिल होने का संकेत दिया। दांडी मार्च के दौरान लगभग हर पड़ाव पर हजारों की संख्या में महिलाएँ गांधीजी को सुनने के लिए एकत्र हुईं और सविनय अवज्ञा को सामूहिक महिला भागीदारी के लिए विशिष्ट बनाया। [10,11,12]

- पुलिस की ज्यादतियों और पितृसत्तात्मक बाधाओं से प्रभावित हुए बिना, महिलाएँ, यहां तक कि मात्र सोलह वर्ष की विधवाएँ (कर्नाटक में अंबाबाई) भी सत्याग्रह में शामिल हुईं। अक्सर जुलूसों में दो-तीन हजार महिलाएँ शामिल होती थीं, जो नमक बनाने, बेचने और बाजारों में खरीदने के लिए बर्तनों, धूपदानों, मिट्टी के घड़ों से लैस होकर नदियों, समुद्र और अन्य जल निकायों की ओर मार्च करती थीं और बिना किसी डर के वन कानूनों सहित दमनकारी स्थानीय कानूनों को तोड़ती थीं, जिससे अधिकारियों को शर्मिंदगी उठानी पड़ती थी। उत्तर पूर्व का आत्मा से अपमान नहीं हुआ। तेरह वर्ष की रानी गाइनेलियू के नेतृत्व में, नागा राष्ट्रवादी ने विदेशियों को मणिपुर से बाहर निकालने के लिए लगातार संघर्ष किया। रानी गाइनेलियू को गिरफ्तार कर लिया गया, (1932), उन्हें अगले पंद्रह साल औपनिवेशिक जेलों के कष्टदायी नरक में बिताने पड़े। आजादी के बाद नेहरू का लगभग पहला कार्य अपनी 'नागा राजकुमारी' की रिहाई के आदेश पर हस्ताक्षर करना था, जिनकी अद्भुत देशभक्ति ने पीढ़ियों को प्रेरित किया।
- संयुक्त प्रांत में विजय लक्ष्मी पंडित संगठन शक्ति थीं, कमला नेहरू ने कर न लगाने के अभियान में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। 26 दिसंबर 1930 को, निषेधाज्ञा का उल्लंघन करते हुए, कमला ने बाज़ार करीम, ब्रैडबुज़ा गांव में 5,000 लोगों को संबोधित किया और उनसे कांग्रेस में शामिल होने, खादी को बढ़ावा देने और करों का भुगतान न करने का आह्वान किया। उन्हें छह महीने के साधारण कारावास की सजा सुनाई गई, जिसे बहुत प्रचार मिला। लेकिन दुख की बात है कि अभी तक लाखों बहादुर महिलाओं जैसे सरस्वती देवी और छब्बीस अन्य, सुंदर देवी और छत्तीस अन्य का योगदान अज्ञात है, जिनमें से प्रत्येक को विरोध प्रदर्शनों, रैलियों, विदेशी वस्तुओं और शराब की दुकानों पर धरना, प्रभात फेरी में भाग लेने के लिए छह महीने के कठोर कारावास की सजा दी गई। इलाहाबाद में देशभक्ति के गीत और भजन गाते हुए। प्राणलाल बनर्जी (इलाहाबाद) की पुत्रवधु श्रीमती बनर्जी ने निषेधाज्ञा के बावजूद मोहम्मद अली पार्क (26/1/32) में जुलूस और स्वतंत्रता दिवस समारोह में भाग लिया, उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया और एक वर्ष के कठोर कारावास की सजा सुनाई गई। मोहिनी देवी को एक साल की सजा सुनाई गई, जबकि हरि देवी, गंगा देवी को इसी तरह की गतिविधियों के लिए छह महीने के कठोर कारावास की सजा सुनाई गई।
- बंबई में, कमला देवी चट्टोपाध्या के अदालत कक्ष में एक चौंका देने वाले मजिस्ट्रेट के साहसपूर्ण प्रवेश ने उनसे 'नमक स्वतंत्रता' का एक पैकेट खरीदने का अनुरोध किया, जिसने बहुत उत्साह पैदा किया। राष्ट्रीय स्त्री सभा की संस्थापक सदस्य पेरिन कैप्टन ने यहां गिरफ्तारी दी। सरोजिनी नायडू, श्रीमती हरि राम (लाहौर के सर गंगा राम की बहू), जंग बहादुर की पत्नी श्रीमती ज्ञान देवी, सुश्री जुल्शी, श्रीमती ताराचंद को अलग-अलग अवधि के लिए कैद किया गया था। सुश्री सत्यवती मेरठ नगर परिषद के लिए चुनी गई (1931), स्त्री हितों के लिए समर्पित पत्रिका 'ज्वाला सखा' की संपादक, को दो साल के कठोर कारावास (1932) की सजा सुनाई गई; जेल से उन्होंने अपना उपनिवेशवाद विरोधी लेखन जारी रखा। नमक के एकाधिकार को तोड़ने वाली महिलाओं ने दर्शाया कि कैसे घरेलू जीवन, राजनीतिक और भारतीय राष्ट्रीयता से जुड़ा हुआ था - लिंग अध्ययन में समकालीन फैशनेबल शोध विषय।
- स्वदेशी, असहयोग आंदोलनों के दौरान, पुलिस महिलाओं पर अत्याचार करने से सावधान थी, लेकिन सविनय अवज्ञा के दौरान महिलाओं को नहीं बख्शा गया। जैसे ही पुलिस ने सत्याग्रह को तोड़ने के लिए क्रूर बल का इस्तेमाल किया, महिला स्वयंसेवक अपने निहत्थे पुरुष सत्याग्रहियों की सहायता के लिए आगे बढ़ीं, एटनबरो की ऑस्कर विजेता फिल्म 'गांधी' में इसे बहुत ही मार्मिक ढंग से दर्शाया गया है। गिरफ्तार महिलाओं ने अपने मुकदमे के दौरान गवाही दी कि उन्हें बालों से घसीटा गया, पीटा गया, उन पर थूका गया, उनकी थालियाँ भी छीन ली गईं, कुछ को रात में जंगलों में छोड़ दिया गया। अधिकारियों ने उन्हें विभिन्न प्रकार से 'नीची जाति', 'सम्मानित वर्गों' से न होने, 'ढीले चरित्र', 'महिलाओं को रखने' वाला बताया। इस तरह के अपमान ने लीलावती मुंशी सहित राष्ट्रवादी नेताओं को नाराज कर दिया, जिन्होंने ब्रिटेन के नैतिक, सभ्य दावों को खारिज कर दिया, विश्व प्रेस में रिपोर्ट की, जिससे भारतीय हित के प्रति सहानुभूति प्राप्त हुई।

भारत छोड़ो आंदोलन:

- जब 1942 में गांधी ने 'भारत छोड़ो', भारत छोड़ो आंदोलन शुरू किया, तो कई महिलाएं प्रभावशाली पदों पर आसीन थीं, जैसे छात्र, व्यापार, श्रमिक संघ, किसान आंदोलन और क्रांतिकारी संगठनों की सदस्य। उमा नेहरू इलाहाबाद नगर पालिका की शिक्षा समिति की सदस्य और अध्यक्ष चुनी गईं (1926); बीबी रघबीर कौर पंजाब विधान परिषद की सदस्य थीं, जिससे बेगम शाह नवाज़, सुश्री लेखवती जैन भी जुड़ी हुई थीं। दुर्गाबाई जोशी मध्य प्रांत विधानसभा की सदस्य चुनी गईं; राज कुमारी अमृत कौर, कांग्रेस और अखिल भारतीय महिला सम्मेलन (एआईडब्ल्यूसी) की एक प्रभावशाली सदस्य थीं; सुचेता कृपलानी कांग्रेस की महिला शाखा की प्रमुख थीं।
- 1942 में, उपनिवेशवादियों ने तेजी से लगभग शीर्ष राष्ट्रीय नेताओं को गिरफ्तार कर लिया, लेकिन स्थानीय कार्यकर्ताओं, जिनमें अक्सर महिलाएं शामिल थीं, ने आंदोलन को आगे बढ़ाया, विरोध मार्च, हड़ताल, प्रदर्शनों का नेतृत्व किया, राष्ट्रीय ध्वज फहराया, गिरफ्तारी दी, उपनिवेश विरोधी साहित्य वितरित किया। सुभद्रा जोशी ने भूमिगत से साइक्लोस्टाइल समाचार पत्र 'हमारा संग्राम' प्रकाशित किया। मासिक कांग्रेस पत्रिका 'इंकलाब' की संपादक अरुणा आसफ अली ने बंबई के गोवालिया टैंक मैदान में राष्ट्रीय ध्वज फहराया, आंदोलन को निर्देशित करने के लिए भूमिगत हो गईं। कस्तूरबा गांधी, राज कुमारी अमृत कौर, रामेश्वरी नेहरू, श्रीमती सत्यवती, लज्जावती, प्रभावती देवी भी समान रूप से सक्रिय थीं, जिनमें से प्रत्येक को अलग-अलग अवधि के लिए कैद किया गया था, कुछ को एकांत कारावास में रखा गया था। जेल में कस्तूरबा की मृत्यु पर राष्ट्रीय स्तर पर शोक मनाया गया। इंदिरा नेहरू, जिन्होंने बचपन में वानर सेना का आयोजन किया था, 1938 में कांग्रेस में शामिल हो गईं, उन्हें तेरह महीने की जेल हुई।
- उषा मेहता, एक प्रतिबद्ध देशभक्त ने स्वतंत्रता-युद्ध के "मंत्र" का प्रसार करने के लिए "वॉयस ऑफ फ्रीडम" नामक एक रेडियो ट्रांसमीटर की स्थापना की। विरोध और गिरफ्तारी की खबरें, युवा राष्ट्रवादियों के कार्य और भारत छोड़ो आंदोलन के लिए गांधी का प्रसिद्ध "करो या मरो" संदेश जनता के बीच प्रसारित किया गया। उषा मेहता और उनके भाई अपनी गिरफ्तारी तक प्रसारण के अपने कार्य में लगे रहे।
- भारत छोड़ो आंदोलन भीतरी इलाकों में महिलाओं की भागीदारी के लिए अद्वितीय था, जहां छात्रों, किसानों और वामपंथी दलों के अभियानों ने महिला कैडरों वाले संघ, समाज बनाए थे। इस प्रकार किसान सभा (अवध), और ऑल इंडिया स्टूडेंट्स फेडरेशन, बंगाल में महिला आत्म रक्षा समिति ने अपनी महिला कार्यकर्ताओं को अक्सर सामाजिक रूप से आर्थिक रूप से हाशिए पर रहने वाली पृष्ठभूमि से राम पियारी और महाराज कुमारी को फतेहपुर (यूपी) में संगठित किया, जिन्हें संबोधित करने के लिए छह महीने की जेल हुई। ग्राधीपुर बाज़ार में एक सौ लोगों की सभा ने युद्ध विरोधी नारे लगाते हुए कहा कि सरकार के युद्ध प्रयासों में सहायता करना 'हराम' है।
- यहां उन उग्र, देशभक्त महिलाओं की भूमिका का वर्णन करना उचित है, जिन्होंने याचिका की राजनीति को त्याग दिया और बल द्वारा बल का मुकाबला करने में विश्वास किया। लगभग हमेशा शिक्षित महिला क्रांतिकारी, आमतौर पर कॉलेज में क्रांतिकारियों के संपर्क में आती थीं जिनकी दूरदर्शिता, साहस ने उन्हें उनके संगठनों में शामिल होने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने अंतर-धार्मिक, अंतर-जातीय विवाह करके, बम बनाने, हथियार चलाने का प्रशिक्षण लेकर सामाजिक रूप से साहसिक बयान दिए, इसलिए उन्हें सामाजिक, पारिवारिक रूप से बहिष्कृत कर दिया गया। नोनिबाला देवी (1888-1967-जुगंतार पार्टी) और श्रीमती वोहरा (दुर्गा भाभी) जैसे कई लोगों ने हथियार छिपाए, क्रांतिकारियों को उनकी पत्नी के रूप में काम करके कवर प्रदान किया, अधिकारियों को चकमा दिया और इस तरह क्रांतिकारी एजेंडे को बनाए रखने में मदद की। ऐसे गुप्त कृत्यों के लिए अत्यधिक साहस, बुद्धिमत्ता, कूटनीति की आवश्यकता होती है।[11,12,13]

निष्कर्ष

क्रांतिकारी लतिका घोष ने महिला राष्ट्रीय संघ की स्थापना की (1928); वीणा दास ने बंगाल के गवर्नर की हत्या का प्रयास किया, कमला दास गुप्ते और कल्याणी दास की कट्टरपंथी गतिविधियों ने प्रशंसा जगाई। कल्पना दत्त, प्रीतिलता ने चटगांव शस्त्रागार छापे में भाग लिया जिसमें कई क्रांतिकारी पकड़े गए, मारे गए। प्रीतिलता ने चटगांव में यूरोपीय क्लब पर बमबारी करते हुए शहादत स्वीकार कर ली, लेकिन कल्पना दास बच निकलीं और वर्षों तक छिपते-छिपाते और जेल में रहीं।[13,14] वह भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी में शामिल हो गईं, गरीबों के जीवन को बेहतर बनाने की दिशा में काम किया, 1943 के बंगाल अकाल के दौरान चिकित्सा सहित राहत का आयोजन किया; और विभाजन के दौरान हिंदुओं, मुसलमानों को समान रूप से आश्रय दिया। भारत की स्वतंत्रता, मानवतावाद के प्रति ऐसी प्रतिबद्धता ने अंतर्राष्ट्रीय ध्यान आकर्षित

किया, फिर भी दक्षिण एशियाई इतिहास में हाशिए पर रखा गया। डॉ. लक्ष्मी स्वामीनाथन के नेतृत्व में महिलाओं की विशेष रानी लक्ष्मीबाई रेजिमेंट (आईएनए) की स्थापना महिला साहस, देशभक्ति के लिए एक अंतिम श्रद्धांजलि थी।[15]

संदर्भ

1. "वे महिलाएं जिन्होंने बदलाव लाया" । हिन्दू । 10 अगस्त 2010. 29 जून 2011 को मूल से संग्रहीत ।
2. ^ "वीरमंगई वेलु नचियार" । द हिंदू बिजनेस लाइन । 18 जनवरी 2019 । 1 दिसंबर 2023 को पुनःप्राप्त .
3. ^ जर्नीज़ इंग्लिश कोर्स बुक 6 । पियर्सन एजुकेशन इंडिया। 2007. पी. 78.
4. ^ "किचूरु की रानी चेत्रम्मा" (प्रेस विज्ञप्ति)। भारत सरकार । 17 अप्रैल 2022 को लिया गया ।
5. ^ एशियाटिक जर्नल खंड 3 (1830)। 1824 में किचूरु की घटनाएँ । लंदन: पारबरी, एलन, एंड कंपनी पीपी 218-222।
6. ^ ओ'मैली, लुईस सिडनी स्टीवर्ड (1985)। भारतीय सिविल सेवा, 1601-1930 । लंदन: फ्रैंक कैस. पी। 76. आईएसबीएन 978-0-714-62023-7.
7. ^ गोपालकृष्णन, सुब्रमण्यम (सं.) (2007)। दक्षिण भारतीय विद्रोह: 1800 से पहले और बाद में (पहला संस्करण)। चेन्नई: पलानीअप्पा ब्रदर्स। पृ. 102-103. आईएसबीएन 978-8-183-79500-5.
8. ^ पति, बिस्वामोय (29 सितंबर 2017)। "भारत 'विद्रोह' और 'क्रांति,' 1857-1858" । ऑक्सफोर्ड ग्रंथ सूची। डीओआई : 10.1093/ओबो/9780199791279-0040 ।
9. ^ सरला, श्रीकृष्ण (1999)। भारतीय क्रांतिकारी: एक व्यापक अध्ययन, 1757-1961 । वॉल्यूम. आई. प्रभात प्रकाशन. आईएसबीएन 978-81-87100-16-4.
10. ^ बट्टी नारायण (2006)। उत्तर भारत में महिला नायक और दलित दावा: संस्कृति, पहचान और राजनीति । समझदार। आईएसबीएन 978-0-7619-3537-7.
11. ^ विश्वकर्मा, संजीव कुमार। नारीवाद और साहित्य: पाठ और संदर्भ । इलाहाबाद (भारत): तख्तोताज़। पृ. 132-139. आईएसबीएन 978-81-922645-6-1.
12. ^ गुप्ता, चारु (2007)। "दलित 'वीरंगनाएं' और 1857 का पुनर्निर्माण"। आर्थिक और राजनीतिक साप्ताहिक । 42 (19): 1739-1745। जेएसटीओआर 4419579 ।
13. ^ "लक्ष्मी बाई"। ब्रिटैनिका. 27 नवंबर 2021 को मूल से संग्रहीत। 5 दिसंबर 2021 को लिया गया।
14. ^ देशपांडे, प्राची (अगस्त 2008)। "द मेकिंग ऑफ़ एन इंडियन नेशनलिस्ट आर्काइव: लक्ष्मीबाई, झाँसी, और 1857" । एशियाई अध्ययन जर्नल । 67 (3): 855-879। डीओआई : 10.1017/एस0021911808001186 । आईएसएसएन 1752-0401 . एस2सीआईडी 146225979 । 5 दिसंबर 2021 को मूल से संग्रहीत । 5 मई 2021 को लिया गया ।
15. ^ लेब्रा-चैपमैन, जॉयस (1986)। झाँसी की रानी: भारत में महिला वीरता का एक अध्ययन । होनोलूलू, हवाई: हवाई विश्वविद्यालय प्रेस। पृ. 1-4. आईएसबीएन 0-8248-0984-एक्स.



INTERNATIONAL
STANDARD
SERIAL
NUMBER
INDIA



INTERNATIONAL JOURNAL OF INNOVATIVE RESEARCH

IN SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

 9940 572 462  6381 907 438  ijirset@gmail.com



www.ijirset.com

Scan to save the contact details